प्रसार पत्रक क्रमांक-9

पशुओं में अफारा .
कारण, इलाज व बचाव

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय,
चौ. स. क. हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय,
पालमपुर - 176 062

आलेख

डा. आलोक शर्मा, सह-प्राध्यापक
डा. शिवानी कटोच, सहायक प्राध्यापक
पशु चिकित्सा एवम् पशुपालन प्रसार विभाग,
चौ. सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय,
पालमपुर-176 062

8. अफारे की चिकित्सा के लिए और बहुत दवाईयां है और इलाज के तरीके है जो केवल एक पशु चिकित्सक ही प्रयोग में ला सकता है । इसलिए डाक्टरी सहयता ही प्राप्त कर लेनी चाहिएं ।
9. अफारा उतर जाने पर एक दम से खाने को नहीं देना चाहिए जब तक पेट अच्छी तरह से साफ न हो जाये । पेट साफ हो जाने पर हाजमेदार चूर्ण 3-4 दिन तक देना चाहिए ।

बचाव

- *पशुओं को चारा डालने से पहले ही पानी पिलाना चाहिए ।*
- *भोजन में अचानक परिवर्तन नहीं करना चाहिए । हरा चारा सूखे चारे के साथ मिलाकर देना चाहिए और इसकी मात्रा धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिए ।*
- *गेहूँ, मकई या दूसरे अनाज अधिक मात्रा में खाने को नहीं देनें चाहिए ।*
- *हरे चारे पूरी तरह पकने पर ही पशुओं को खाने को देनें चाहिए ।*
- *जो पशु हर समय बंधे रहते हो उन्हें कुछ समय के लिए खुला छोड़ देना चाहिए। पशुओं को प्रतिदिन व्यायाम कराने से 'रयुमन' की यथाक्रम हरकत बनी रहती है जो कि पशु के स्वास्थय के लिए बहुत महत्वपूर्ण है ।*
- *खेत से पशुओं के घर लौटने पर उन्हे कुछ समय आराम करने के पश्चात ही भोजन या पानी देना चाहिए ।*

पशुओं में अफारा : कारण, इलाज व बचाव

जुगाली करने वाले पशु जैसे गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट आदि के मेदे के पहले भाग में (जिसे अंग्रेजी में 'रयूमन' कहते है), अधिक मात्रा में गैसों से उत्पन्न होने से फूल जाने पर अफारा हो जाता है । रयुमन में भोजन के पचते समय किसी भी कारणवश कई प्रकार की गैसें उत्पन्न हो जाती है जोकि अफारे का कारण बनती है आमतौर पर अफारा गीले चारे (जिन में पानी की मात्रा अधिक हो) खिलाने से होता है जबकि गोबर का बन्ध सूखा चारा खिलाने से होता है गोबर का बन्ध होने पर भी अफारा हो जाता है ।

कारण : पशुओं में अफारा होने के कई कारण हो सकते है जो निम्नलिखित है:-

1. पशुओं को ऐसी खुराक अधिक खाने को देना जिसमें कि खाने के तुरन्त पश्चात ही उफान आ जाए : जैसे फलीदार हरे चारे, गाजर, मूली, बन्द गोभी आदि, विशेष कर जब यह गले सड़े या पाले से प्रभावित हों ।
2. बरसीम, लुसर्न, जेई और दूसरे रसदार हरे चारे जो पूरी तरह से पके न हों, विशेषकर जब यह गीले होते है तो अफारे का करण बनते है ।
3. गेहूँ, मकई आदि जैसे अनाज जिन में स्टार्च की मात्रा अधिक होती है, अधिक खा लेने से भी अफारा हो जाता है ।
4. जब 'रयुमन' की मांसल अवस्था दोष युक्त होती है तो खाए हुए भोजन रयुमन में मथने का कार्य ठीक ढंग से नही हो पाता जिससे अफारा हो जाता है ।
5. मेदे में भोजन को पचाने वाले स्त्राव का दोष युक्त होना ।
6. भोजन में अचानक परिवर्तन कर देने से । जिस पशु को सूखा चारा खाने को मिलता हो एक दम हरा चारा पेट भर खिलाने से ।
7. भोजन प्रणाली में कीड़ों, बाल के गोले या खाई हुई किसी दूसरी वस्तु से रूकावट होना ।

8. पशु के तपेदिक रोग का होना ।
9. पशु को भूमि पर गिराते समय उसके शरीर का बांया भाग नीचे की ओर होना और पशु को काफी समय तक इसी ही अवस्था में रहने देना ।
10. मेदे के किसी भाग में कील, तार, बालों का गोला, कपड़ा या ऐसे ही दूसरे पदार्थ का होना जो कि पच न सकें और मेदे की यथाक्रम हरकत होने में रूकावट डालें ।
11. पशु को चारा खाने के तुरन्त पश्चात पेट भर पानी पिलाने से ।

लक्षण

अफारे के लक्षण इतने स्पष्ट होते है कि पशुओं में इस के के होने का बहुत आसानी से पता चल जाता है । बाई ओर की कील फूल जाती है और पेट का आकार अधिक बढ़ा हुआ दिखाई पड़ता है । यदि बाई कील पर हाथ मारा जाये तो ढोलक की तरह बजती है ।

पेट दर्द और बेचैनी के कारण पशु भूमि पर पैर मारता है और बार-बार डकार लेता है । बांई कील की ओर बेचैनी से देखता है और पेट पर पूँछ मारता है।

रयुमन का गैसों से अधिक फूल जाने के कारण छाती पर दबाब पडता है जिससे साँस लेने में तकलीफ होती है । पशु सिर आगे की ओर बढ़ा कर खड़ा होता है । नथुने चौड़े हो जाते है और मुंह खुला रहता है कुछ पशु पसीने से तर हो जाते है या बेचैन और सुस्त दिखाई पड़ते है ।

गोबर और पेशाब थोड़ी-थोड़ी मात्रा में बार-बार आता है । नाड़ी की गति तेज हो जाती है किन्तु तापमान सामान्य रहता है । पशु खाना बन्द कर देता है और जुगाली नही करता । दूध देने वाले पशुओं में दूध कम हो जाता है ।
अधिक अफारा होने पर पशु की हालत गंभीर हो जाती है जो बडें पशुओं की अपेक्षा भेड़ों में अधिक गंभीर होती है अधिकतर अफारा होने पर उनकी मृत्यु हो जाती है।

इलाज

अफारा हो जाने पर इलाज में थोड़ी भी देर करने से भी पशु की मृत्यु हो जाती है । इसलिए इलाज में देरी नहीं करनी चाहिए । होशियारी और सावधानी से काम लेकर नीचे लिखे ढंग से इलात करना चाहिए :-

1. रोगी का खाना बिल्कुल बन्द कर देवें ।
2. उचित डाक्टरी सहायता शीघ्र प्रबन्ध करें । यह भी ध्यान रहे कि नाल देते समय पशु की जुबान नहीं पकड़नी चाहिए । यदि दवाई पिलाते समय खाँसी आ जाए तो पशु की गर्दन नीचे कर देनी चाहिए और शेष दवाई कुछ समय के बाद ही पिलानी चाहिए । यदि दवाई पिलाने पर आराम न आये तो लगभग 12 घंटे बाद ऊपरलिखित दवाई तेल के साथ फिर दी जा सकती है । इस बीच चिकित्सक से सम्पर्क जरूर कर लें ।
3. अफारा बहुत ही अधिक हो तो पशु की जीभ हाथ से पकड़ कर बाहर खींचे । एक रस्सा पशु के पेट पर इस प्रकार से डालें कि यह पेट के नीचे से होकर गुजरे और इसके दोनो किनारें बांई और दांई कील के ऊपर से गुजरें । रस्से का एक किनारा बांई ओर और दूसरा दांई ओर पकड़ ले और तीसरा आदमी पशु को आगे से पकड़ लें । पशु के बराबर खड़े दोनों आदमी रस्से को अपनी-अपनी ओर खींचे और फिर ढ़ीला छोड़ दें । इस क्रिया को कई बार करें । जब रस्सा कील से फिसलने लगे तो ठीक स्थान पर रख दें । ऐसा करने से 'रयुमन' से हवा निकलने लगेगी और अफारा कम होगा । लेकिन यह क्रिया बड़ी ही सावधानी से करनी चाहिए । यदि रस्सा खींचते समय पशु गिरने लगे तो रस्सा ढीला कर दें और पशु को गिरने से रोके ।
4. पशु को ऐसे स्थान पर रखें जो साफ और समतल हो और ताजी हवा भली प्रकार आती हो ।
5. जहां तक हो सके अफारे सी हालत में पशु को बैठने नहीं देना चाहिए और धीरे-धीरे टहलाना चाहिए । ऐसा करने से 'रयुमन' की यथाक्रम हरकत जो कि अफारे के कारण कम हो जाती है बढ़ती है और अफारे में आराम आता है ।
6. यदि अफारा बन्ध के कारण हो तो एनीमा करने से लाभ हो सकता है ।